

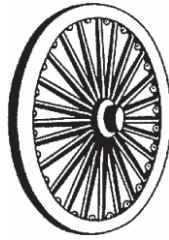


मेत्ताविहारिणी माताजी :
श्रीमती इलायचीदेवी गोयन्का



मेत्ताविहारिणी माताजी :

श्रीमती इलायचीदेवी गोयन्का



विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

मेत्ताविहारिणी माताजी

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन	१
प्रस्तावना : भाभीमां की सहनशीलता	५
मंगलदीप!	१५
शुभ-संदेश!	१६

माताजी के पत्र एवं गुरुजी के उद्बोधन

माताजी के कुछ पत्रांश	१९
गुरुजी के उद्बोधन	
१. धर्म जागता रहे!	२३
२. तुम्हारे द्वारा महिलाओं का कल्याण होगा	२४
३. धर्म-चेतना जाग्रत रहे	२६
४. धर्म सदैव रक्षा करेगा	२७
५. अपनी साधना मजबूत करो	२८
६. अनित्यबोध पुष्ट हो	२९
७. चित्त की उदासी भी अनित्य है	३३
८. चिंताएं दूर हों	३४
९. प्रेरणा के दो शब्द	३६
१०. धर्म प्रज्ञा जाग्रत रहे	३८

धर्म-यान का दूसरा चक्का

साधकों की कलम से

१. महापुरुष की महान सहधर्मिणी	४३
२. कुशल गृहिणी	४६
३. मैं वही करूंगी जो ये करते हैं	४८
४. धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा एवं विश्वास	५४

५. सजगता और समता की मूर्ति	६०
६. भावुक स्मरण	६२
७. अति अल्पेच्छ	६३
८. करुणा-मैत्री की भण्डार	६६
९. कितनी सरल हैं मां!	६९
१०. माताजी का सही मार्गदर्शन	७०
११. अपना समय धर्म-कार्य में लगाओ	७२
१२. कुछ यादें (पू. माताजी से संबंधित)	७४
१३. प्रगति के लिए सेवा दें	७६
१४. परिवार की उपेक्षा नहीं	७७
१५. तुम्हें बहुत से पुत्र बनाने हैं	७८
१६. धर्म दम्पति	७९
१७. पूज्य गुरुजी-माताजी के सान्निध्य में धर्मयात्रा	८०
१८. एक पल के लिए भी साथ नहीं छोड़ा	८३
१९. विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोया	९०
२०. माताजी सब संभाल लेंगी	९४

करुणा-शांति की दूत माताजी: अलविदा

१. एक आदर्श मां	९७
२. अब तो स्मृति मात्र शेष है	१००
३. कुछ महत्त्वपूर्ण स्मृतियां	१०२
४. हम कृतज्ञ हैं	१०४
५. माताजी के संस्मरण	१०६
६. माताजी का स्नेहाशीष	१०८
७. माताजी का अमूल्य मार्गदर्शन	११३
८. क्या सचमुच माताजी नहीं हैं?	११५
९. करुणा-शांति की दूत माताजी: अलविदा	१२१
विपश्यना साहित्य	१२५
विपश्यना साधना के केंद्र	१२९



विश्व विपश्यनाचार्या श्रीमती इलायचीदेवी गोयन्का

३.२.१९३० से ५.१.२०१६

प्राक्कथन

साधिका सज्जन बाई की तरह अनेक साधक-साधिकाओं के मन में यह द्वंद्व रहा होगा और आज भी हो सकता है कि सिखाते तो पू. गुरुजी हैं, माताजी तो बस चुपचाप बैठी रहती हैं। कालक्रम में पूज्य माताजी के निकट आने पर साधिका का यह भ्रम जाता रहा। इस शंका का समाधान एक साक्षात्कार में पू. माताजी ने स्वयं किया है। वे कहती हैं – मैं ज्यादा नहीं बोलती, क्योंकि मैं इस तथ्य के प्रति सचेत रहती हूँ कि कहीं कुछ गलत न हो जाय। बचपन से ही मेरा यह स्वभाव रहा है कि किसी विषय पर जो कई लोगों से संबंधित हो कम बोलूँ। ज्यादा अच्छा है कि केवल देखूँ। चौकस रहना ज्यादा अच्छा है, बजाय इसके कि सक्रिय होकर भाग लिया जाय व बातें की जायँ। मौन होकर देखना ही तो विपश्यना का मूल मंत्र है, जिसे पू. माताजी ने बचपन से ही पकड़ लिया था।

इस मुनि माताजी की भूमिका से परिचित कराने के लिए श्रद्धेय सत्येन्द्रनाथ टंडनजी का प्रयास स्तुत्य है। उन्होंने माताजी के निकट रहने वाली अनेक साधिकाओं से उनके बारे में लेख/संस्मरण आमंत्रित किया। ये माताजी के जीवनकाल में ही एकत्र किये गये। इस कार्य में बीसों साधिकाओं ने सहयोग किया, उनके साथ दो-एक पुरुष भी हैं। कुछ ने पू. माताजी के देहावसान के बाद लिख भेजा। इसी बीच पू. माताजी को पू. गुरुजी द्वारा संबोधित/प्रेषित कुछ प्रेरणाजनक पत्रों की प्रतिलिपियाँ प्राप्त हो गयीं, जिन्हें पू. गुरुजी ने १९६९-७० में भारत आने के बाद लिखा था। इन पत्रों में माताजी द्वारा गृहस्थी की तथा बच्चों आदि के भविष्य को लेकर चिंताएं व्यक्त की गयी हैं तो पूज्य गुरुजी ने उनका किस प्रकार धर्मपूरित उत्तर देकर निश्चित रहने का आश्वासन दिया है। उनके सुझाव निश्चित ही सभी साधकों/पाठकों के लिए प्रेणास्पद हैं। ये पत्र सब को धर्मपथ पर विश्वास रख कर अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए प्रेरित करते हैं। समय पाकर सभी बाधाएं दूर होती हैं और जीवन का उजला पक्ष स्वतः उजागर होता है।

१९६९ में पूज्य गुरुजी, परमपूज्य दादा गुरुजी (सयाजी ऊ बा खिन) द्वारा आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किये जाने के बाद अकेले भारत आये थे।

अपने प्रथम संक्षिप्त पत्र में उन्होंने केवल धर्म की बातें की हैं। पर बाद के पत्रों में धर्म और गृहस्थी दोनों की चर्चा है। वे गृहस्थ आचार्य थे, इसलिए ऐसा करना उचित ही था। धर्म के संबंध में मुख्यतया उन्होंने तीन बातें लिखीं हैं— १. एक तो देवी इलायची आश्रम में जाकर विपश्यना का अभ्यास चालू रखें, २. शीघ्र ही भारत आकर धर्मदान में सहयोग करने को तैयार रहें और ३. बर्मा स्थित परिवार का साधना-अभ्यास चलाती रहें। गृहस्थी की बातों में पारिवारिक सदस्यों के स्वास्थ्य, शिक्षा और जो बड़े हो गये हैं उनके लिए रोजगार तथा व्यवसाय आदि की व्यवस्था का जिक्र है।

भारत पहुँचने पर दस दिनों के अंदर ही उन्होंने मुंबई में पहला शिविर लगाया। इसके बाद तो विभिन्न क्षेत्रों से शिविर की मांग आने लगी। यहां पू. गुरुजी ने प्राथमिकता धर्म को दी और जब शिविर न चलता तब प्रयास करते कि बेटों के लिए रोजगार-व्यवसाय को भी थोड़ा समय दें। इस प्रकरण को 'माताजी के प्रति गुरुजी का उद्बोधन' के अंतर्गत रखा गया है।

साधिकाओं द्वारा प्राप्त लेखों/संस्मरणों को 'धर्मयान का दूसरा चक्का' शीर्षक दिया गया है। पू. माताजी के मुंबई आने के पूर्व जो धर्मयान केवल एक चक्के (गुरुजी) के सहारे चल रहा था, अब वह उनके आ जाने पर दो चक्के पर चलने लगा। धर्म में माताजी के योगदान को साधिकाओं ने विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रकट किया है, जैसे- कुशल गृहिणी, करुणामयी मां, करुणा-मैत्री की भंडार, सजगता-समता की मूर्ति, आदर्श दम्पति, नींव की ईंट, उचित परामर्शदात्री, सतत दानी... आदि। कुछ एक उनके गुणों से इतनी अभिभूत हो गयीं कि अंतरतम के कुछ भाव किसी तरह से व्यक्त करके बार-बार प्रणाम कर रही हैं। उनके अनुसार माताजी ने पल-भर के लिए गुरुजी का साथ नहीं छोड़ा और संकट की घड़ी में दृढ़ स्तम्भ की तरह डटी रहीं। एक साधक दम्पति ने तो पू. गुरुजी और पूजनीया माताजी के आपसी विमर्श को लक्ष्य करके कहा— गुरुजी के अभाव में माताजी हमें निर्देश भी देती रहेंगी और मेता भी। सचमुच पू. गुरुजी के शरीर त्याग के बाद ढाई वर्षों तक पू. माताजी ही तो समस्त विपश्यना कार्यक्रम का संचालन करती रहीं। पांच दिसंबर २०१५ को वे ऑपरेशन के लिए अस्पताल में भर्ती हुईं और ५ जनवरी १६ को उन्होंने शरीर त्याग दिया। इस प्रसंग के उद्गार 'करुणा-शांति की दूत: अलविदा' में आये हैं।

धर्म के प्रसार के संबंध में पूजनीया माताजी के संबंध में जो भी जानकारी उपलब्ध हुई है उसे **हिमशैल सिद्धांत** (आइसवर्ग थ्योरी) के रूप में समझना चाहिए जिसका केवल एक भाग पानी के ऊपर दिखाई पड़ता है और नौ भाग पानी के अंदर होता है, जिसे हम देख नहीं सकते।

धर्मदान से प्राप्त होने वाले पुण्य के विषय में पू. माताजी को लिखते हैं – "हमारा संबंध न जाने कितने जन्मों का है... साथ-साथ सुख-दुःख भोगे हैं और पुण्य कमाये हैं। इस जन्म में फिर हमारा साथ हुआ है।" अब हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि अगले जन्म में हम दोनों ही भारत में पुनः जनमेंगे और अनेक जन्मों में अर्जित अपने पुण्यों के आधार पर विपश्यना-आंदोलन को उनकी ऊँचाइयों तक पहुँचाते हुए अनेक दुखियारे लोगों के दुःख दूर करने में सहायक होंगे।

